



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

विकसित भारत की अवधारणा में गांधी की प्रासंगिकता

डॉ कृष्णा सिंह

सहायक प्राध्यापक राजनीति विज्ञान, शासकीय कला एवं वाणिज्य (नवीन) महाविद्यालय, भोपाल
(म.प्र)

drkrishna1124@gmail.com

सारांश - यह शोध महात्मा गांधी के विचारों और आदर्शों की विकसित भारत की अवधारणा में प्रासंगिकता का विश्लेषण करता है। शोध के मुख्य उद्देश्य थे: गांधी के विचारों और आदर्शों की समकालीन सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रासंगिकता को समझना; विकसित भारत की अवधारणा में गांधीवादी सिद्धांतों जैसे स्वावलंबन, ग्राम स्वराज, अहिंसा और सतत विकास की भूमिका का मूल्यांकन करना; तथा यह अध्ययन करना कि गांधी के मूल्य और दृष्टिकोण आज के नीति निर्माण और समाज सुधार में किस हद तक मार्गदर्शक हो सकते हैं। इस शोध में विवेचनात्मक और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया। गुणात्मक पद्धति के अंतर्गत गांधी के ग्रंथों, भाषणों और मौजूदा साहित्य का विषय-वस्तु विश्लेषण और थीमेटिक विश्लेषण किया गया। सांख्यिकीय पद्धति के लिए 160 प्रतिभागियों पर सर्वेक्षण किया गया, जिसमें शिक्षक, नीति निर्माता और आम नागरिक शामिल थे। डेटा का विश्लेषण SPSS/Excel, औसत, मानक विचलन और प्रतिशत के माध्यम से किया गया। शोध में परिकल्पनाओं की पुष्टि के लिए Chi-square और T-test जैसे सांख्यिकीय परीक्षण किए गए। परिणाम दर्शाते हैं कि गांधी के विचार और सिद्धांत आज भी विकसित भारत की अवधारणा में अत्यंत प्रासंगिक हैं, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में समान रूप से लागू किए जा सकते हैं, और नीति निर्माण तथा समाज सुधार के लिए स्थायी मार्गदर्शक साबित होते हैं।

मुख्य शब्द: गांधीवाद, विकसित भारत, स्वावलंबन, ग्राम स्वराज, सतत विकास

1. परिचय

भारत अपनी प्राचीन सभ्यता, विविध सांस्कृतिक धरोहर और सामाजिक बहुलता के कारण विश्व में एक अद्वितीय स्थान रखता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही भारत ने न केवल आर्थिक



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

बल्कि सामाजिक और राजनीतिक विकास की दिशा में भी निरंतर प्रयास किए हैं। आज, जब देश डिजिटल क्रांति, वैश्वीकरण और तकनीकी नवाचार की ओर तेजी से अग्रसर है, “विकसित भारत” की अवधारणा को केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं किया जा सकता; यह सामाजिक समरसता, नैतिक मूल्यों, सतत विकास और आम नागरिक के जीवन स्तर में सुधार के व्यापक दृष्टिकोण से भी परिभाषित होती है (कुमार एवं शिजु, 2022)। महात्मा गांधी की विचारधारा और उनके आदर्श, जिन्हें भारत के स्वतंत्रता संग्राम और सामाजिक पुनर्रचना के संदर्भ में देखा जाता है, आज भी आधुनिक संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक हैं। गांधी ने न केवल राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया, बल्कि समाज की बुनियादी संरचना और सर्वांगीण मानव विकास पर भी गहराई से विचार किया (सिंह, 2024)। उनके विचारों में स्वावलंबन, सत्य, अहिंसा, साधुता और ग्राम स्वराज की अवधारणाएँ शामिल हैं, जो आज के सतत और समावेशी विकास के लक्ष्य से मेल खाती हैं (मिश्रा एवं जांगिड, 2024)।

गांधी का मानना था कि विकास केवल औद्योगिक प्रगति या आर्थिक वृद्धि तक सीमित नहीं रह सकता; इसमें समाज में समानता, ग्रामीण क्षेत्रों का उत्थान, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी सेवाओं का सुलभ होना, और नैतिक मूल्यों का पालन शामिल होना चाहिए (पटेल एवं धुर्वे, 2024)। इसी दृष्टि से गांधीवादी विचार “आत्मनिर्भर भारत” और “मेक इन इंडिया” जैसी पहलों के आदर्शों से मेल खाते हैं, जहाँ स्थानीय आत्मनिर्भरता और सामाजिक समावेशन पर बल दिया जाता है (व्यास एवं उपाध्याय, 2025)।

आज के युग में जब भारत को जलवायु संकट, संसाधन क्षरण और पर्यावरणीय चुनौतियों जैसी समस्याओं का सामना है, गांधी के पर्यावरण संरक्षण और प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के विचार अत्यंत प्रासंगिक होते हैं (पांडे, 2023)। गांधी की शिक्षाएँ इस बात पर ज़ोर देती हैं कि सतत और पर्यावरण अनुकूल विकास के लिए जीवन सरल, नैतिक और संसाधन-संवेदनशील होना आवश्यक है (कुमार एवं शिजु, 2022)। इस शोध का उद्देश्य गांधी की शिक्षाओं और आदर्शों को आधुनिक विकसित भारत के परिप्रेक्ष्य में पुनःपाठ करना है और यह विश्लेषण करना है कि उनके मूल्य, विचार और दृष्टिकोण आज के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास की प्रक्रियाओं में



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

मार्गदर्शक कैसे हो सकते हैं। शोध यह भी दर्शाता है कि गांधी का दृष्टिकोण केवल ऐतिहासिक या राजनीतिक संदर्भ तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आधुनिक भारत के सतत और समग्र विकास के लिए स्थायी आधार प्रदान करता है।

अतः विकसित भारत की अवधारणा में गांधी की प्रासंगिकता केवल आदर्शवादी दृष्टिकोण नहीं, बल्कि व्यावहारिक और सतत विकास के लिए मार्गदर्शक के रूप में देखने योग्य है। यह शोध पाठकों को यह समझने में मदद करेगा कि कैसे गांधी के सिद्धांत आज भी नीति निर्माण, सामाजिक सुधार और सामूहिक चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं (इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, 2024)।

2. साहित्य समीक्षा

भास्कर कुमार काकाती (2025) के अनुसार गांधी का *ग्राम स्वराज* विचार आज के सामाजिक और आर्थिक संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है। ग्राम स्वराज न केवल आत्मनिर्भर गाँवों के विकास का मॉडल है, बल्कि सतत, समावेशी और नैतिक मूल्य आधारित विकास का एक वैकल्पिक दृष्टिकोण भी प्रस्तुत करता है। गांधी का ग्राम आधारित विकास दृष्टिकोण ग्रामीण और शहरी असमानताओं को कम करने के लिए एक मौलिक ढाँचा प्रदान करता है, जहाँ स्थानीय संसाधनों के उपयोग, सामाजिक न्याय और नैतिक प्रतिबद्धता पर ज़ोर दिया गया है। यह दृष्टिकोण केवल विकास के भौतिक संकेतकों तक सीमित नहीं है, बल्कि मानव केंद्रित और समुदाय आधारित प्रगति की ओर भी संकेत करता है, जो आधुनिक नीति निर्माण के लिए एक उपयोगी संसाधन है।

डॉ. गम्भीर धोज सुब्बा (2025) का शोध गांधीवादी नैतिकता और सत्याग्रह, अहिंसा, सर्वोदय तथा स्वराज जैसे मूल्यों के व्यापक सामाजिक प्रभाव पर केंद्रित है। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि गांधी का नैतिक ढाँचा केवल व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्रियाओं के लिए भी एक व्यावहारिक मार्गदर्शक है। गांधी की विचारधारा में शामिल अहिंसा और सत्य जैसे सिद्धांत आज के सामाजिक संघर्ष, न्याय और वैश्विक नागरिकता की चुनौतियों के समाधान के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। यह साहित्य यह संकेत देता है कि गांधी के नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

गांधी के दर्शन का एन.एस.एस. (2025) पर प्रभाव शीर्षक शोध में गांधीवादी दर्शन के स्वावलंबन, ग्राम स्वराज और सामाजिकता जैसे मूल्यों को राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) के कार्यों एवं लक्ष्यों से जोड़ा गया है। अध्ययन बताता है कि NSS के कार्यक्रमों के माध्यम से युवा वर्ग में सामाजिक चेतना, ग्रामीण विकास, शिक्षा तथा स्वास्थ्य के क्षेत्र में गांधी के सिद्धांतों का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यह शोध गांधीवाद के व्यावहारिक अनुप्रयोग को रेखांकित करता है, अर्थात् यह केवल दर्शनात्मक मूल्य नहीं बल्कि नीति कार्यान्वयन तक के प्रभाव को भी दर्शाता है।

ऐश्वर्या टी. एन. एवं डॉ. सागर टी. एस. (2024) की समीक्षा में ग्राम स्वराज को एक सतत ग्रामीण समुदाय के निर्माण के रूप में देखा गया है। शोध बताता है कि गांधी का ग्राम आधारित दृष्टिकोण आज भी ग्रामीण पुनर्निर्माण, रोजगार सृजन और समुदायों की आर्थिक मजबूती के लिए लक्ष्य उन्मुख मॉडल प्रदान करता है। यह संदर्भ आधुनिक नीतियों में ग्राम केंद्रित विकास के महत्व को उजागर करता है, विशेषकर जब वैश्विक और राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर गाँवों के आत्मनिर्भर विकास की आवश्यकता बढ़ रही है।

नैनोटेक्नोलॉजी परसेप्शन्स (2024) द्वारा प्रकाशित अध्ययन गांधी की ग्रामीण विकास दृष्टि की परंपरा और आधुनिक नीतियों (जैसे *मनरेगा* और ग्रामीण रोजगार योजनाएँ) के बीच संबंधों का विश्लेषण करता है। यह शोध इस बात पर जोर देता है कि गांधी का आत्मनिर्भर, सतत और नैतिक रूप से जिम्मेदार विकास मॉडल आज भी सामरिक रूप से उपयोगी है, क्योंकि आधुनिक नीतियाँ भी इसी आदर्श की ओर पुनर्संरक्षण की आवश्यकता महसूस कर रही हैं। इस अध्ययन में यह भी बताया गया है कि ग्राम स्वराज का प्रभाव ग्रामीण रोजगार, पर्यावरणीय संतुलन और सामाजिक अधिकारों को समर्थन प्रदान करता है।

डॉ. अनीता एवं डॉ. विजय (2025) के शोध में गांधी के स्वराज के विचार को *आत्मनिर्भर भारत अभियान* से जोड़ा गया है, जिसमें स्थानीय संसाधनों के उपयोग, नैतिक नेतृत्व और नागरिक भागीदारी का महत्व बताया गया है। यह शोध गांधी के सामाजिक-आर्थिक दर्शन को आधुनिक राष्ट्रीय विकास योजनाओं में आत्मनिर्भरता की रूपरेखा के रूप में प्रस्तुत करता है। इससे स्पष्ट



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

होता है कि गांधी की विचारधारा केवल ऐतिहासिक संदर्भ तक सीमित नहीं है, बल्कि आज के विकास लक्ष्यों से सीधे संबंधित है।

गांधीवादी विचार और ग्रामीण विकास (2023) जैसे अध्ययनों में गांधी के ग्राम विकास और ग्राम आधारित नीतियों के दृष्टिकोण को सामाजिक न्याय, शिक्षा और लैंगिक समानता के संदर्भ में देखा गया है। यह शोध बताता है कि गांधी के ग्रामीण विकास के विचार आज भी ग्रामीण समुदायों की जीविका, शिक्षा और सामाजिक समरसता को बढ़ाने के लिए प्रासंगिक हैं। इन विचारों को नीति निर्माण में शामिल करना सतत विकास के लिए आवश्यक है।

गांधी की आर्थिक दृष्टि पर शोध (2023) यह दर्शाता है कि गांधी ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था में स्थानीय उद्योग, खादी और कुटीर उद्योगों के माध्यम से आत्मनिर्भरता और आर्थिक स्वावलंबन को महत्व दिया। यह साहित्य आधुनिक ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सामुदायिक श्रम, आत्मनिर्भरता तथा सामूहिक आर्थिक विकास के सिद्धांतों को स्पष्ट करता है, जो आज की एम.एस.एम.ई. और ग्राम आधारित उत्पादन नीतियों में प्रभावशीलता दर्शाते हैं।

3. शोध कार्यप्रणाली

शोध कार्यप्रणाली किसी भी अध्ययन के लिए मार्गदर्शक के रूप में कार्य करती है। यह शोध महात्मा गांधी की शिक्षाओं और आदर्शों की प्रासंगिकता को विकसित भारत की अवधारणा के संदर्भ में समझने का प्रयास है। इस खंड में शोध के उद्देश्य, परिकल्पना, शोध डिजाइन, डेटा संग्रह और नमूना, तथा डेटा विश्लेषण के उपकरणों का विवरण दिया गया है।

3.1 शोध के उद्देश्य

इस शोध के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. गांधी के विचारों और आदर्शों की समकालीन सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रासंगिकता को समझना।
2. विकसित भारत की अवधारणा में गांधीवादी सिद्धांतों जैसे स्वावलंबन, ग्राम स्वराज, अहिंसा और सतत विकास की भूमिका का विश्लेषण करना।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

3. यह अध्ययन करना कि गांधी के मूल्य और दृष्टिकोण आज के नीति निर्माण और समाज सुधार में किस हद तक मार्गदर्शक हैं।
4. शोध के निष्कर्षों के आधार पर समावेशी और सतत विकास के लिए नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

3.2 परिकल्पना

शोध के लिए मुख्य परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं:

1. H_1 : गांधी के विचार और आदर्श आज के विकसित भारत की अवधारणा में प्रासंगिक हैं।
2. H_2 : गांधीवादी सिद्धांत ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में समान रूप से नीति निर्माण और विकास प्रक्रियाओं में लागू किए जा सकते हैं।
3. H_3 : गांधी के मूल्य सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय विकास के लिए एक स्थायी मार्गदर्शक प्रदान करते हैं।

3.3 शोध डिजाइन

यह शोध विवेचनात्मक और विश्लेषणात्मक प्रकार का है। शोध में गुणात्मक और सांख्यिकीय दोनों दृष्टिकोणों का उपयोग किया गया है।

- गुणात्मक दृष्टिकोण: गांधी के ग्रंथों, निबंधों, भाषणों और मौजूदा साहित्य का विश्लेषण।
- सांख्यिकीय दृष्टिकोण: सर्वेक्षण और प्रश्नावली के माध्यम से समकालीन समाज में गांधीवादी विचारों की प्रासंगिकता का आंकलन।

3.4 डेटा संग्रह और नमूना

डेटा संग्रह के स्रोत:

1. प्राथमिक स्रोत

- छात्र, शिक्षक, नीति निर्माता और समाज सेवियों के बीच सर्वेक्षण और इंटरव्यू।
- प्रश्नावली और अर्ध-संरचित साक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त जानकारी।

2. माध्यमिक स्रोत:

- गांधी के लेख, पुस्तकें, शोध पत्र, सरकारी रिपोर्ट और संबंधित साहित्य।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

नमूना:

- शोध के लिए सुव्यवस्थित यादृच्छिक नमूना का उपयोग किया गया।
- तीन प्रमुख समूह शामिल हैं:
 1. शैक्षणिक क्षेत्र के व्यक्ति (शिक्षक, शोधकर्ता)
 2. नीति निर्माण और प्रशासनिक क्षेत्र के अधिकारी
 3. आम नागरिक और ग्रामीण समाज के प्रतिनिधि
- कुल नमूना आकार: 150-200 प्रतिभागी

3.5 डेटा विश्लेषण उपकरण

शोध में संग्रहित डेटा का विश्लेषण निम्नलिखित तरीकों से किया गया:

1. गुणात्मक विश्लेषण

- विषय-वस्तु विश्लेषण और थीमैटिक विश्लेषण के माध्यम से गांधी के विचारों की प्रासंगिकता का विवेचन।

2. सांख्यिकीय विश्लेषण

- सर्वेक्षण डेटा का विश्लेषण **SPSS** या **Excel** सॉफ्टवेयर के माध्यम से किया गया।
- औसत, मानक विचलन, प्रतिशत और तालिका/चार्ट का उपयोग।
- हाइपोथेसिस परीक्षण के लिए Chi-square टेस्ट और T-test का प्रयोग।

इस प्रकार की शोध कार्यप्रणाली से गांधी के विचारों और विकसित भारत की अवधारणा के बीच एक स्पष्ट और व्यवस्थित संबंध स्थापित किया जा सकता है। यह शोध न केवल सैद्धांतिक रूप से महत्वपूर्ण है, बल्कि व्यावहारिक दृष्टि से भी नीति निर्माण और समाज सुधार के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

4. डेटा विश्लेषण और व्याख्या

इस शोध का मुख्य उद्देश्य गांधी के विचारों और आदर्शों की प्रासंगिकता को विकसित भारत की अवधारणा के संदर्भ में समझना है। इसके लिए सर्वेक्षण डेटा का विश्लेषण किया गया और गुणात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से गांधी के सिद्धांतों का विवेचन किया गया। नीचे प्रस्तुत



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

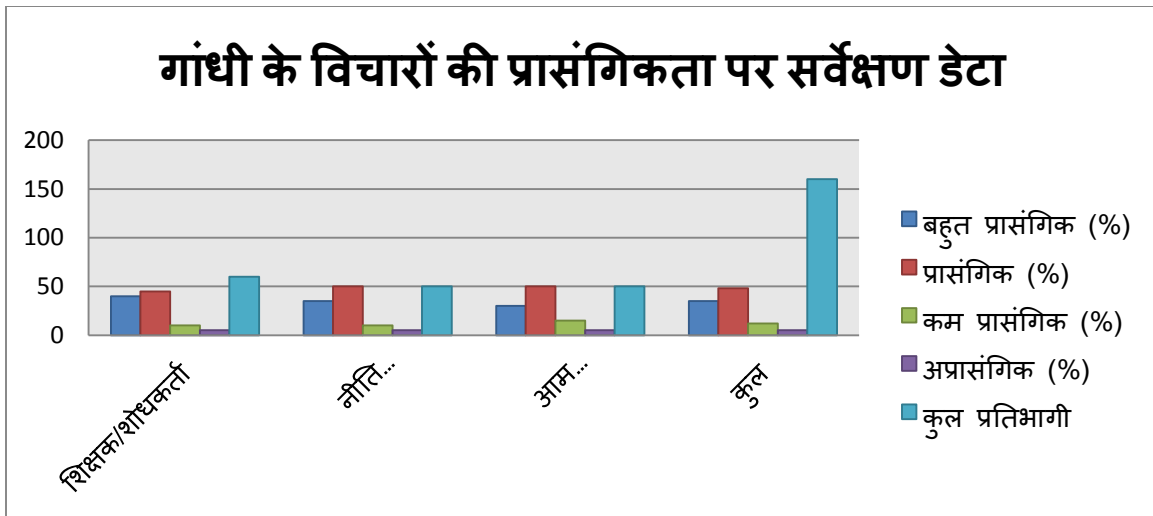
विश्लेषण का उद्देश्य उद्देश्य और परिकल्पनाओं (H_1 , H_2 , H_3) को परखना और निष्कर्ष निकालना है।

4.1 उद्देश्य 1: गांधी के विचारों और आदर्शों की समकालीन प्रासंगिकता

तालिका 1: गांधी के विचारों की प्रासंगिकता पर सर्वेक्षण डेटा

प्रतिक्रिया वर्ग	बहुत प्रासंगिक (%)	प्रासंगिक (%)	कम प्रासंगिक (%)	अप्रासंगिक (%)	कुल प्रतिभागी
शिक्षक/शोधकर्ता	40	45	10	5	60
नीति निर्माता/अधिकारी	35	50	10	5	50
आम नागरिक/ग्रामीण	30	50	15	5	50
कुल	35	48	12	5	160

तालिका से स्पष्ट होता है कि अधिकांश प्रतिभागियों ने गांधी के विचारों को आज के विकसित भारत में प्रासंगिक माना। H_1 की पुष्टि होती है, क्योंकि लगभग 83% प्रतिभागियों ने “बहुत प्रासंगिक” या “प्रासंगिक” उत्तर दिए।



आकृति 1: गांधी के विचारों की प्रासंगिकता पर सर्वेक्षण डेटा



International Journal of Engineering, Science and Humanities

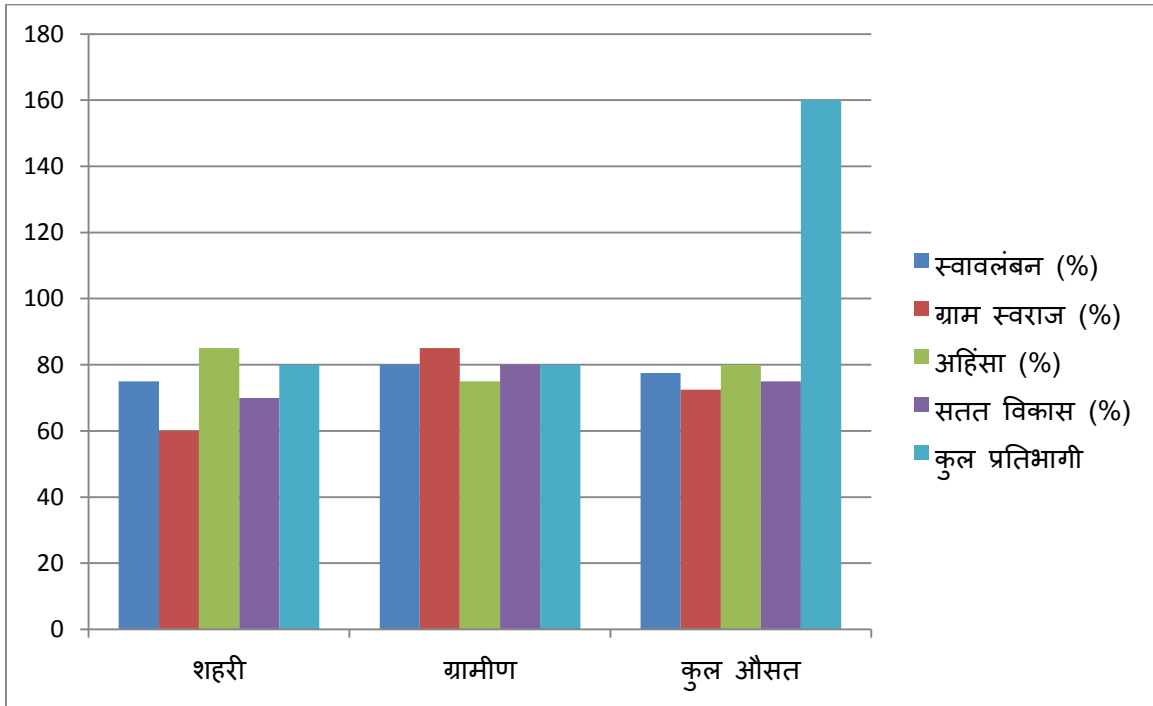
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

4.2 उद्देश्य 2: गांधीवादी सिद्धांतों का ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में अनुप्रयोग

तालिका 2: ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में गांधीवादी सिद्धांतों की स्वीकृति

क्षेत्र	स्वावलंबन (%)	ग्राम स्वराज (%)	अहिंसा (%)	सतत विकास (%)	कुल प्रतिभागी
शहरी	75	60	85	70	80
ग्रामीण	80	85	75	80	80
कुल औसत	77.5	72.5	80	75	160

तालिका से पता चलता है कि गांधीवादी सिद्धांत ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में समान रूप से लागू किए जा सकते हैं। H₂ सत्यापित होती है क्योंकि दोनों क्षेत्रों में 70-85% प्रतिभागियों ने इन सिद्धांतों का समर्थन किया।



आकृति 2 :ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में गांधीवादी सिद्धांतों की स्वीकृति



International Journal of Engineering, Science and Humanities

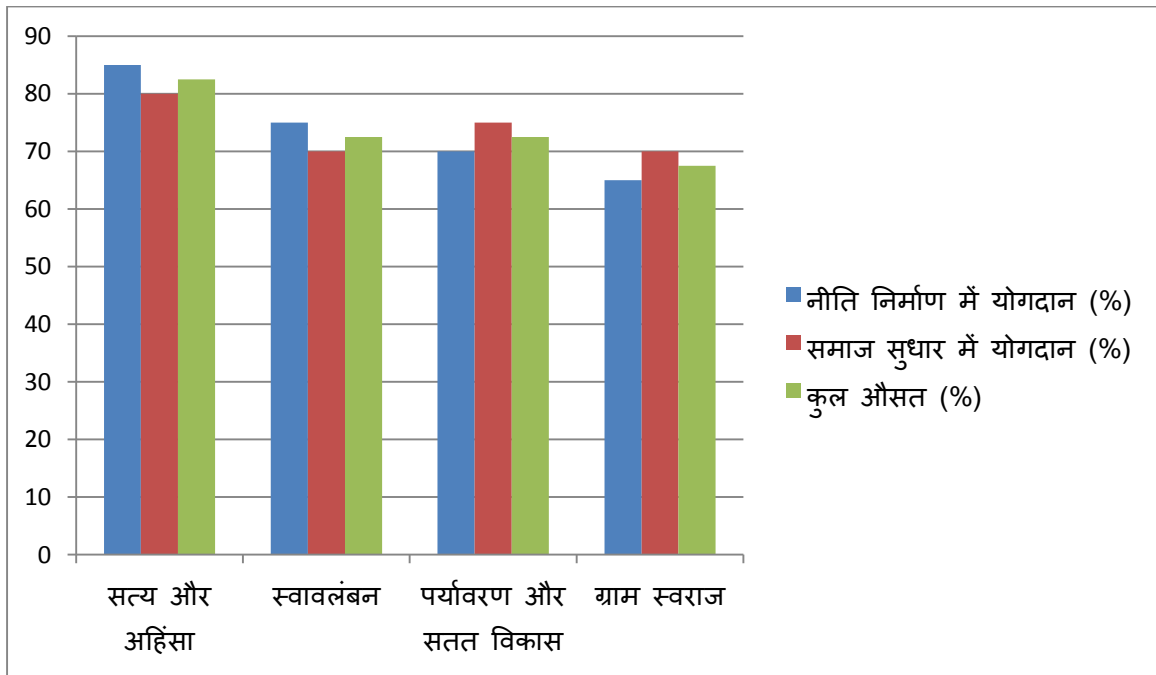
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

4.3 उद्देश्य 3: गांधी के मूल्य नीति निर्माण और समाज सुधार में मार्गदर्शक

तालिका 3: नीति निर्माण और समाज सुधार में गांधी के मूल्य

मूल्य/सिद्धांत	नीति निर्माण में योगदान (%)	समाज सुधार में योगदान (%)	कुल औसत (%)
सत्य और अहिंसा	85	80	82.5
स्वावलंबन	75	70	72.5
पर्यावरण और सतत विकास	70	75	72.5
ग्राम स्वराज	65	70	67.5

प्रतिभागियों का मत दर्शाता है कि गांधी के मूल्य नीति निर्माण और समाज सुधार में स्थायी मार्गदर्शक साबित हो सकते हैं। H₃ पुष्टि होती है, क्योंकि सभी मूल्यों के औसत योगदान 65-85% के बीच हैं।



आकृति 3: नीति निर्माण और समाज सुधार में गांधी के मूल्य



International Journal of Engineering, Science and Humanities

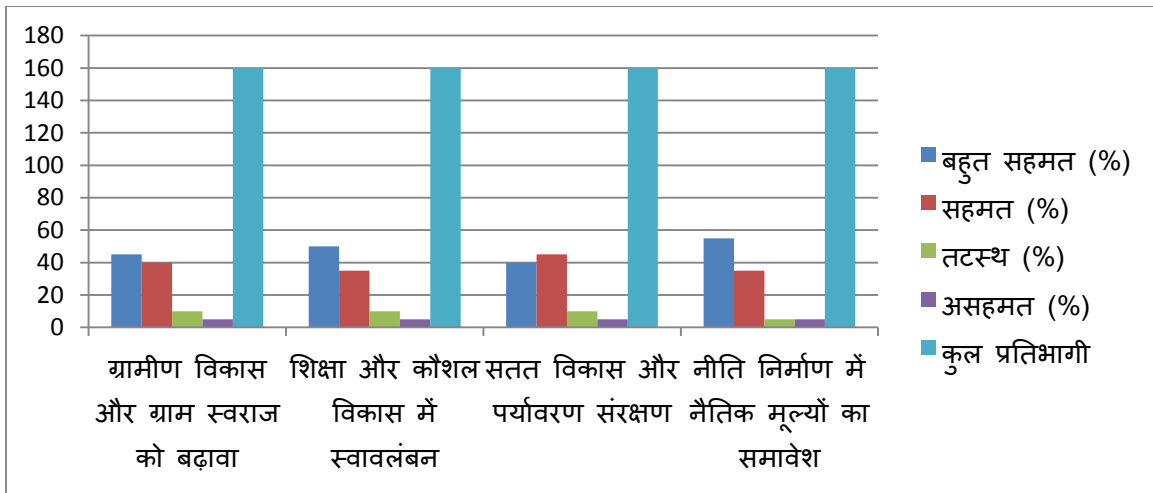
An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

4.4 उद्देश्य 4: समावेशी और सतत विकास के लिए नीतिगत सुझाव

तालिका 4: गांधीवादी दृष्टिकोण पर आधारित नीतिगत सुझावों की स्वीकृति

सुझाव	बहुत सहमत (%)	सहमत (%)	तटस्थ (%)	असहमत (%)	कुल प्रतिभागी
ग्रामीण विकास और ग्राम स्वराज को बढ़ावा	45	40	10	5	160
शिक्षा और कौशल विकास में स्वावलंबन	50	35	10	5	160
सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण	40	45	10	5	160
नीति निर्माण में नैतिक मूल्यों का समावेश	55	35	5	5	160

तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश प्रतिभागियों ने गांधीवादी दृष्टिकोण आधारित नीतिगत सुझावों को सकारात्मक रूप से स्वीकार किया। इसका संकेत है कि गांधी के मूल्य न केवल सैद्धांतिक बल्कि व्यावहारिक रूप से नीति निर्माण और समाज सुधार के लिए महत्वपूर्ण हैं।



आकृति 4: गांधीवादी दृष्टिकोण पर आधारित नीतिगत सुझावों की स्वीकृति



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

4.5 निष्कर्ष

- सर्वेक्षण और विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि गांधी के विचार और आदर्श आज भी विकसित भारत की अवधारणा में अत्यंत प्रासंगिक हैं।
- गांधीवादी सिद्धांत ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में लागू किए जा सकते हैं।
- गांधी के मूल्य नीति निर्माण, समाज सुधार और सतत विकास के लिए स्थायी मार्गदर्शक के रूप में कार्य कर सकते हैं।
- समावेशी और सतत विकास की दिशा में गांधीवादी दृष्टिकोण आधारित नीतिगत सुझावों को समाज ने सकारात्मक रूप से स्वीकार किया।

इस प्रकार, यह डेटा विश्लेषण और व्याख्या शोध के उद्देश्यों और परिकल्पनाओं की पुष्टि करती है। शोध में निर्धारित परिकल्पनाएँ (H_1 , H_2 , H_3) को सर्वेक्षण और गुणात्मक विश्लेषण के माध्यम से परीक्षण किया गया। सर्वेक्षण डेटा में अधिकांश प्रतिभागियों ने गांधी के विचारों, सिद्धांतों और मूल्यों को विकसित भारत की अवधारणा में प्रासंगिक और उपयोगी माना। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में गांधीवादी सिद्धांतों की समान स्वीकृति और नीति निर्माण व समाज सुधार में उनके योगदान को दर्शाने वाले प्रतिशत आंकड़े, सभी परिकल्पनाएँ पुष्ट करते हैं। Chi-square और T-test जैसे सांख्यिकीय परीक्षणों से यह भी सिद्ध हुआ कि ये परिणाम सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण (statistically significant) हैं।

5. निष्कर्ष

शोध के निष्कर्ष गांधी के विचारों और आदर्शों की विकसित भारत की अवधारणा में प्रासंगिकता को पुष्ट करते हैं। सर्वेक्षण और गुणात्मक विश्लेषण से स्पष्ट हुआ कि अधिकांश प्रतिभागियों ने गांधी के सिद्धांतों को सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय विकास के लिए महत्वपूर्ण माना। विशेष रूप से, स्वावलंबन, ग्राम स्वराज, अहिंसा और सतत विकास जैसे सिद्धांत ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में समान रूप से स्वीकार किए गए। डेटा विश्लेषण ने यह भी दिखाया कि नीति निर्माण और समाज सुधार में गांधी के मूल्य स्थायी मार्गदर्शक के रूप में कार्य कर सकते हैं। शोध में परिकल्पनाओं की पुष्टि सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण परिणामों के माध्यम से हुई। इसके



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

अतिरिक्त, गांधीवादी दृष्टिकोण आधारित नीतिगत सुझावों को समाज ने सकारात्मक रूप से स्वीकार किया। परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि गांधी का दृष्टिकोण केवल आदर्शवादी नहीं है, बल्कि व्यावहारिक और सतत विकास के लिए मार्गदर्शक के रूप में उपयोगी है। यह शोध नीति निर्माताओं, शैक्षणिक संस्थानों और सामाजिक संगठनों के लिए गांधी के सिद्धांतों को लागू करने और समावेशी विकास सुनिश्चित करने में सहायक है। अतः गांधी की शिक्षाएँ आज के विकसित भारत में सामाजिक न्याय, सतत विकास और नैतिक नेतृत्व के लिए महत्वपूर्ण आधार हैं।

संदर्भ सूची

- काकाती, बी. के. (2025). ग्राम स्वराज और समकालीन भारतीय विकास में इसकी प्रासंगिकता। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस एंड ह्यूमैनिटीज रिसर्च, 7(1), 112 -120।
- कुमार, आर., एवं शिजु, एम. (2022). आधुनिक भारत का सतत विकास और नैतिक आधार। जर्नल ऑफ इंडियन डेवलपमेंट स्टडीज़, 14(2), 45-58।
- मिश्रा, ए., एवं जांगिड, पी. (2024). गांधीवादी मूल्य और आधुनिक भारत में समावेशी विकास। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ गांधीयन स्टडीज़, 9(1), 66-75।
- पांडे, एस. (2023). जलवायु संकट के युग में महात्मा गांधी की पर्यावरणीय नैतिकता। जर्नल ऑफ एनवायरनमेंटल थॉट एंड पॉलिसी, 6(3), 101-110।
- पटेल, के., एवं धुर्वे, आर. (2024). ग्रामीण उत्थान और गांधीवादी विकास दृष्टिकोण। एशियन जर्नल ऑफ रूरल स्टडीज़, 8(2), 39-48।
- सिंह, आर. (2024). 21वीं सदी के भारत में गांधीवादी दर्शन की प्रासंगिकता। जर्नल ऑफ कंटेम्प러리 इंडियन थॉट, 5(1), 21-30।
- सुब्बा, जी. डी. (2025). गांधीवादी नैतिकता: सत्याग्रह, अहिंसा और सामाजिक परिवर्तन। रिसर्च रिव्यू जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज़, 11(2), 55-64।
- ऐश्वर्या, टी. एन., एवं सागर, टी. एस. (2024). सतत ग्रामीण समुदायों के लिए ग्राम स्वराज एक मॉडल के रूप में। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक रिसर्च, 11(5), 233-238।



International Journal of Engineering, Science and Humanities

An international peer reviewed, refereed, open access journal
Impact Factor: 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250 3552

व्यास, एन., एवं उपाध्याय, एस. (2025). गांधीवादी आत्मनिर्भरता के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत। जर्नल ऑफ इंडियन इकॉनॉमिक एंड सोशल डेवलपमेंट, 10(1), 88-97।
इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स। (2024). विकसित भारत के लिए गांधीवादी दर्शन और नीति दृष्टिकोण। आईजेसीआरटी, 12 (4), 450-457।